इकाई - IV

10. नीति दोहे

-रहीम, बिहारी

उन्मुखीकरण

फलवाले जो तरु होते हैं धरती तक नम जाते।
बिन फलवाले वृक्ष व्यर्थ ही अपनी अकड़ दिखाते।
बनो वृक्ष फलदार, नम्रता से जीवन सरसाओ।
बुलबुल मीठा बोले, कोयल प्यार सभी से पाये।
पर कौवे की बोली उसको अपमानित करवाये।
बुलबुल कोयल बनो, न बोली कौवे की अपनाओ।

प्रश्न

1. कवि ने बिना फल वाले वृक्षों के विषय में क्या कहा है?
2. फलदार वृक्ष की विशेषता बताइए।
3. बुलबुल और कौए में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उद्‌देश्य

छात्रों को काव्य रचना में दोहा छंद से परिचित कराना, सृजन करने की प्रेरणा देना और उनमें नैतिक मूल्यों का विकास करना इस पाठ का मुख्य उद्‌देश्य है।

विधा विशेष

दोहे बहुत प्रभावशाली होते हैं। ये मात्रिक छंद हैं। दोहे के पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। यहाँ दिये गये दोहे नीतिपरक व उपदेशात्मक हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *नैतिक गुणों के विकास द्वारा ही हम अच्छे-बुरे, सही-ग़लत में भेद कर सकते हैं।*

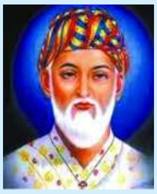

कवि - रहीम, जीवनकाल - 1556 - 1626
प्रसिद्ध रचनाएँ : *रहीम सतसई, बरवै नायिका भेद, श्रृंगार सोरठ*
विशेष : संस्कृत, अरबी, फ़ारसी के विद्वान थे।
अकबर के मित्र, प्रधान सेनापति व मंत्री थे।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून।।

1. रहीम के अनुसार सच्चे मित्र की पहचान कब होती है?
2. 'साँचे' शब्द का क्या अर्थ है?
3. पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून - पंक्ति का भाव बताइए।

कवि - बिहारी, जीवनकाल - 1595 - 1663 , प्रसिद्ध रचना - *बिहारी सतसई*
विशेष - इनके दोहे नीतिपरक होते हैं। इनके दोहों के लिए 'गागर में सागर' भर देने वाली बात कही जाती है।

कनक-कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।
उहि खाए बौराइ जग, इहिं पाए बौराइ।।

नर की अरु नल नीर की, गति एकै कर जोइ।
जेतौ नीचौ ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ।।

4. किसके मिलने पर मनुष्य पागल हो जाता है?
5. बिहारी ने नर की तुलना किससे की है?
6. बिहारी के अनुसार व्यक्ति को कैसा होना चाहिए?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. नीति वचनों का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव होता है?
2. वस्तु विनियोग की दृष्टि से एक के स्थान पर उससे अधिक वस्तुएँ खरीदना ठीक नहीं है? क्यों?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. पाठ से 'ध्वनि साम्य' वाले शब्द चुनकर लिखिए। जैसे : रीत, मीत
2. रहीम के दोहे में 'पानी' शब्द का प्रयोग कितनी बार हुआ है। उसके अलग-अलग अर्थ क्या हैं?

(इ) भाव स्पष्ट कीजिए।

1. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
   पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून।।
2. कनक-कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।
   उहि खाए बौराइ जग, इहिं पाए बौराइ।।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. रहीम ने जल के महत्व के बारे में क्या बताया है?
2. बिहारी ने सोने की तुलना धतूरे से क्यों की होगी?

(आ) किन्हीं दो दोहों का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) पाठ में दिये गये दोहों के आधार पर कुछ सूक्तियाँ लिखिए।

(ई) पाठ में दिये गये दोहों में आपको कौनसा दोहा बहुत अच्छा लगा? क्यों?

भाषा की बात

(अ) अर्थ के अनुसार बेमेल शब्द पहचानिए।

1. नीर, पीर, जल, पानी - ....
2. मीत, रीत, मित्र, दोस्त - ....
3. जग, संसार, विश्व, मग -..........................

(आ)

1. यमक अलंकार समझिए। यमक का अर्थ 'दो' होता है। किसी शब्द की पुनरावृत्ति भिन्न-भिन्न अर्थों में होती है, तो उसे यमक अलंकार कहते हैं।	उदाहरण : कनक-कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ। उहि खाए बौराइ जग, इहिं पाए बौराइ।।
2. दोहा छंद समझिए। दोहा मात्रिक छंद है। इसके पहले चरण में तेरह मात्राएँ, दूसरे चरण में ग्यारह मात्राएँ होती हैं। तीसरे चरण में तेरह मात्राएँ और चौथे चरण में ग्यारह मात्राएँ होती हैं।	उदाहरण : । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ । रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। ऽ ऽ । ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ । पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून।।

(इ) 1. यमक अलंकार का एक उदाहरण दीजिए।

2. दोहा छंद का एक उदाहरण दीजिए।

(ई) नीचे दिये गये शब्दों में प्रत्यय पहचानकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. लौकिक 2. नैतिक 3. पौराणिक

परियोजना कार्य

इस पुस्तक में हर पृष्ठ पर एक-एक नीति वाक्य दिया गया है। उनमें से आपकी मनपसंद दस नीतियों की सूची बनाकर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।